रक्तदान – महादान

प्रस्तावना दान, जिसे हमारे शास्त्रों में सत्कर्म माना जाता है। दान का अर्थ है - निःस्वार्थ भाव से किसी की सहायता। जहाँ स्वार्थ नहीं है, वहाँ परहित की भावना है और परहित से ही सच्चे सुख की प्राप्ति होती है। दान कई प्रकार के होते हैं - धन, विद्यादान आदि, लेकिन एक ओर दान है, जो सर्वोच्च है और वह दान है ''रक्तदान''। इसमें रक्त एक व्यक्ति से दूसरे को निःशुल्क उपलब्ध कराया जाता है। रक्त संसार के सभी जीवों में पाया जाने वाला एक ऐसा समान पदार्थ है, जो एकता की भावना को भी प्रदर्शित करता है, अमीर हो या गरीब, सबमें रक्त लाल रंग का ही होता है इसलिए संस्कृत मे रक्त का अर्थ लाल होता है। ये दुनिया का एक घना जाल है इसमें फंसे हुए हम लोग कुछ सत्कर्मों की सहायता से ही बंधन मुक्त होते हैं।

दान का कोई मोल नहीं, दान तो है अनमोल।

रक्त की संरचना अब बात आती है रक्त की संरचना की । रक्त लाल रंग का द्रव है, जो दो भागों से मिलकर बना होता है पहला भाग प्लाज्मा तथा दूसरा भाग रूधिराणु। रक्त में लाल रक्त कणिकाएँ और श्वेत रक्त कणिकाएँ उपस्थित रहती हैं। लाल रक्त कणिकाओं का रंग पीला होता है और ये लाखों की संख्या में उपस्थित रहती हैं इसलिए रक्त लाल होता है (विज्ञान) दोनों प्रकार की कणिकाएँ रक्त में संतुलन बनाए रखती है। रक्त कणिकाओं की खोज से ज्ञात होता है रक्त चार प्रकार का होता है ए, बी, एबी, ओ। इन चार समूहों के अतिरिक्त रक्त के और भी चार प्रकार होते हैं, अंतर सिर्फ इतना है कि (आर एच फेक्टर) ऋणात्मक समूह होते हैं। इन सभी रक्त समूहों की संरचना भिन्न-भिन्न होती है। ए समूह वाला व्यक्ति केवल ए, बी समूह वाला व्यक्ति केवल बी से रक्त ले सकता है। एबी रक्त समूह वाला व्यक्ति ए, बी समूहों को रक्त दे सकता है, लेकिन केवल एबी वाले से ही ले सकता है। इसी प्रकार ओ समूह वाला व्यक्ति सभी समूहों ए, बी, एबी, ओ को रक्त दे सकता है लेकिन ओ से ही ले सकता है। इसमें धनात्मक व ऋणात्मक रक्त समूह भी विशेषता रखते हैं। यही रक्त की संरचना है। रक्त का निर्माण विभिन्न भोज्य पदार्थों के पाचन के फलस्वरूप जटिल प्रक्रिया द्वारा होता है।

भ्रांतियाँ रक्तदान से संबंधित कई भ्रांतियाँ हैं - कुछ लोग यह सोचते हैं कि रक्तदान करने से कमजोरी आ जाती है। क्या ये बात सही है ? बिल्कुल नहीं, विचार कीजिए आपके शरीर में 3000 मिली से 5000 मिली तक रक्त पाया जाता है, यदि आप इसमें से 300 मिली ही दान कर दें, तो इसमें कौन सी हानि है। यदि हमारे शरीर से रक्त की मात्रा कम होती है, तो हमारे शरीर के रक्त बनाने की दर बढ़

जाती है। 48 घंटों में रक्त के तरल भाग की पूर्ति हो जाती है और लगभग 6 हफ्तों में ही पूर्ण रक्त बनकर तैयार हो जाता है। अतः रक्तदान करने से कोई कमजोरी नहीं आती।

कुछ लोग यह भ्रांति रखते हैं कि यदि वे रक्तदान करेंगे तो बीमारी से सवंमित हो जाएँगे। ऐसा बिल्कुल नहीं है। रक्तदान के समय सर्वप्रथम रक्तदाता की रक्त संबंधित विशेष जांच होती है। उसके पश्चात ही वह रक्त दान करता है। ऐसा करने से रक्तदाता किसी बीमारी का शिकार नहीं होता। बहुत से लोग रक्त के बारे में जाते हुए भी रक्तदान नहीं करते, क्योंकि वे सोचते हैं ''इते तो हैं मेरी क्या आवश्यकता है'' और इसी सोच में डूबे हुए वे एक पुण्य से वंचित रह जाते हैं। यदाकदा ऐसी परिस्थितियों में लोग रक्ताभाव के कारण मर जाते हैं। यह भी एक भ्रांति है कि जो लोग हष्ट-पुष्ट होते हैं, केवल वे ही दान कर सकते हैं, ये आम व्यक्ति की बात नहीं। ये भ्रांति बिल्कुल गलत है प्रत्येक स्वस्थ व्यक्ति चाहे वह कैसा भी हो उसमें रक्त मात्रा समान होती है, 5000 मिली से अधिम रक्त की मात्रा नहीं होती। महिलाएँ भी रक्तदान कर सकती हैं, क्योंकि शारीरिक संरचना में सब समान हैं। रक्त बनने का प्रक्रम भी वही है और रक्त की मात्रा भी। इस प्रकार रक्तदान से संबंधित जो भी भ्रांतियाँ हैं वे सब रक्तदान न करने के सिर्फ बहाने हैं। सच तो यह है कि रक्तदान से दाता और ग्राही को लाभ ही होता है, न कि हानि।

रक्तदान दान संबंधित, नहीं कोई भ्रांति। रक्तदान से जगाओ, एक नई क्रांति।।

प्रमाण - 52 बार रक्तदान करने वाले श्री हजारी जी पूर्णरूपेण स्वस्थ हैं।

रक्तदान महादान

रक्तदान कर हम किसी की जिंदगी बचा सकते हैं हमारे रक्त का कुछ अंश किसी के जीवन को सुखमय बना सकता है। हम उसके जीवन की रक्षा कर सकते हें और किसी की भी जीवन रक्षा सबसे बड़ा पुण्य है। इस पूरे शरीर में एक छोटी सी ज्योति के कारण हम जीवित है यदि किसी कारणवश यह ज्योति बुझने वाली हो और कोई इसमें तेल रूपी रक्तदान दे, तो ज्योति जलने में समर्थ होगी। उसे नया जीवन मिलेगा। आप इस पुण्य के कारण महादानी की संज्ञा पाएँगे। सभी हिन्दु धर्मों में भी कहा गया है कि ''जीव हत्या पाप है''। यदि यह सत्य है, तो जीवन रक्षा पुण्य है। यह भी सत्य होगा। अतः रक्तदान-महादान है।

हमारे भारत देश में ही ऐसे बहुत से दानी हुए हैं, जिन्होनें स्वयं का ध्यान न रखते हुये सर्वस्व दान में दे दिया। दानवीर कर्ण जिन्होनें अपने कवच-कुण्डल, जानते हुए भी कि ये उनके जीवन का आधार है, दान में दे दिए। महर्षि दधीचि-संसार को वृत्तासुर से बचाने के लिए अपनी अस्थियों का दान कर दिया। राजा हरिश्चंद्र जिन्होनें राजा होते हुए भी अपना सर्वस्व दान कर दर-दर की ठोकरें खाईं। ये सब इतिहास प्रसिद्ध नाम हैं। आपके रक्त की एक-एक बूँद भी किसी के लिए अमृत का काम करेगी। यदि किसी व्यक्ति को रक्त की आवश्यकता है, आप उसे रक्तदान करते हैं तो वह आपको दुआएँ देगा सच्ची शांति मिलेगी।

सेवा करें, समाज की, तो इसमें है बुराई क्या। लहू का रंग एक है तो, सोचने की बात क्या।।
आओ करें रक्तदान, इसमें है अजीब क्या।। रक्तदान महादान है।।

उपसंहार

हम सब रक्त के कार्य, उसकी संरचना, उसकी भ्रांतियाँ और उनका खण्डन इन सभी के बारे में जान चुके हैं। ज्यादा कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है इस परहित उद्देश्य को हम समझ चुके हैं। अतः हम सभी को रक्तदान अपनी आदत में लाना चाहिए। रक्तदान संबंधित जानकारियां लोगों को देना चाहिए।

रक्तदान है महादान, ये जन-जन को समझाएँ।
लहु की हर इक बूँद-बूँद को, परहित में ही लगाएँ।।